दुसरा अध्याय

''रियाज़ की प्राथमिक जानकारी''

प्रस्तावना :

सामान्यत: रियाज़ यानी अभ्यास, साधना। संगीत कला में रियाज़ याने संगीत का अभ्यास, संगीत की साधना। व्यवहार में, कोई भी बात बगैर अभ्यास किए जानी नहीं जा सकती। अभ्यास से ही व्यक्ति उस बात का आकलन कर पाता है और अभ्यास से ही उसे उसका पूर्ण ज्ञान होने लगता हैं। इसलिए, रियाज़ को अभ्यासपूर्ण मेहनत की कृति, कहना भी उचित होगा, ऐसा शोधार्थी का मानना है। जब हम 'संगीत कला' की बात करे तो, संगीत में रियाज़ का अनन्यसाधारण महत्व हैं। संगीत कला में इस तरह, अभ्यास तो जरुरी होता ही है, लेकिन यहाँ पर 'निरंतर अभ्यास', याने 'अथक मेहनत की अखंड श्रृंखला', जरुरी होती है और यहीं संगीत कला का महत्व भी है। इसलिए, रियाज़ को अभ्यासपूर्ण मेहनत की अखंड श्रृंखला कहना उचित होगा।

संगीत में वादन विधा के अंतर्गत 'तबला वादन' का अंतर्भाव होता है। तबला यह अवनध्द वाद्य के श्रेणी में आता है। तबला वादन में रियाज़ की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इस कष्टसाध्य लय तालवाद्यको केवल रियाज़ से ही साध्य किया जाता है। पहले अध्याय में हमने तबले के वर्णो की एवं उनके रियाज़ की चर्चा कर दी हैं। तबला जगत के विद्वानोंने रियाज़ का महत्व को केवल मुँह से न बताते हुए, उसे प्रत्यक्ष वादन से, रियाज कर के सिध्द किया है। रियाज़ यह प्रत्यक्ष वादन याने प्रत्यक्ष कृति की ही संकल्पना है। विद्वानों का यही आदर्श वर्तमान पीढ़ी के लिए हमेशा ही एक प्रेरणास्त्रोत रहा है और रहेगा। विद्वानों के आदर्श तथा उनके विचारों पर चलना हमारा परम कर्तव्य है, ऐसा शोधार्थी का मानना है।

रियाज़ याने अभ्यास, अभ्यासपूर्ण वादन कृति। तबले का रियाज़ करना याने तबले की प्रत्यक्ष वादन–विचार कृति करना, ऐसा प्राथमिक स्तर पर जानना चाहिए। लेकिन यह, प्रत्यक्ष वादन–विचार कृति क्या है? प्रत्यक्ष वादन क्या हैं? और हाँ, तबले का रियाज़ याने केवल प्रत्यक्ष वादन करना ही है या और कुछ? आदि। इन

सभी बातों की प्राथमिक जानकारी वादक को होना आवश्यक है। प्रत्यक्ष रियाज़ याने प्रत्यक्ष वादन के पूर्व शोधार्थी ने रियाज़ का सामान्य अर्थ एवं रियाज़ की परिभाषा जानने का एक अत्यंत कष्टसाध्य प्रयास किया है।

2.1 रियाज़ की परिभाषाः

रियाज़ का सामान्य अर्थ है मेहनत, अभ्यास। तबले का रियाज़ माने तबले की मेहनत, तबले का अभ्यास, जिसे तबले की साधना भी कहा जाता है। तबला वादन में रियाज़ की अहम् भूमिका होती है।

रियाज़ के बारे में प्रथमतः हम विद्वानो के विचार जानने की कोशिश करेंगे;

डॉ. एस्. आर. चिश्ती के कथन अनुसार,

''उर्दू शब्द कोष के अनुसार रियाज़ का शाब्दिक अर्थ है मेहनत, मशक्कत, कसरत, वरजिश (व्यायाम) आदि।''[1]

पं. सुधीर माईणकरजी के कथन अनुसार,

''तालीम का सामान्य अर्थ है– मेहनत, रियाज़।''[2]

इसपर, शोधार्थी के मतानुसार, रियाज़ का सामान्य अर्थ है संगीत कला की सातत्यपूर्ण साधना। रियाज़ माने अविश्रांत मेहनत की अव्याहत श्रृंखला। रियाज़ माने अभ्यासपूर्वक जान लेने की ईच्छाशक्ति तथा उसे आत्मसात करने कृति।

रियाज़ को परिभाषित करते हुए तबले के विद्वानों ने अपने अनुभवजन्य विचार रखे है।

पं. सुधीर माईणकरजी लिखते है, ''संगीत मे गुरू के योग्य मार्गदर्शन से समझकर किए गए रियाज़ को 'तालीम' कहते हैं।''[3]

शोधार्थी के गुरू पं. अरविंद मुलगांवकरजी रियाज़ के बारे में अपने विचार रखते हुए कहते है, ''तबलावादन में कर्णमधुरता, मिठास (Sonority) इनका सर्वप्रथम महत्व हैं, उसके बाद गतिमानता तथा लयबंध की क्लिष्टता। आदर्श स्वतंत्र तबलावादन हेतु यह तीनों बातें महत्वपूर्ण होती हैं। इनकों साध्य करने के लिए तबलावादक के दायें तथा बायें के हाथों में प्रमाणबध्द प्रभुत्व होना आवश्यक है, जो केवल रियाज़ से एकनिष्ठ रहकर ही साध्य हो सकता है। आदर्श तबलावादक बनना हो तो रियाज़ करना और भी आवश्यक है।''[4]

पं. सुरेश तळवलकरजी रियाज़ की व्याख्या करते हुए कहते है,

''शास्त्र–विद्या हे बुध्दीशी, तंत्र शरीराशी, तर कला मनाशी निगडित असते. म्हणूनच कलाकाराकडून शारीरिक, बौध्दिक आणि मानसिक या तिन्ही स्तरावर दिला जाणारा वेळ, म्हणजेच रियाझ. वादनाचा सर्वांगीण विचार हा रियाझातून, चिंतनातूनच होऊ शकतो.''[5]

शोधार्थी के गुरु पं. आमोद दंडगेजी रियाज़ को परिभाषित करते हुए कहते है,

''विशिष्ट ध्येयाने प्रेरित होऊन योग्य मार्गदर्शनाच्या आधारे होकारात्मक दृष्टिकोनसहित उद्देशाच्या पूर्तीसाठी केलेल्या अविश्रांत मेहनतीची दीर्घकाळ चालणारी प्रक्रिया म्हणजे रियाझ होय.''[6]

अर्थात, उपरोक्त दी हुई सभी परिभाषाएँ यह केवल विद्‌वानों की शब्द संपत्ति न होते हुए उनके द्‌वारा ली गयी अथक मेहनत का सार है, तपस्या है, प्रगल्भ विचार है तथा महत्वपूर्ण अनुभव है, जो उन्होंने वर्तमान पीढीं के सामने आदर्शव्रत रखे है। सचमुच, रियाज़ ही कलाकार की सच्ची पूँजी होती है, इसमें कोई संदेह नही।

तबलावादन कला यह एक गुरुमुखी विद्या है, जो परंपरा से समर्थ गुरुद्‌वारा शिष्य को प्राप्त होती है।

इसपर, शोधार्थी के मतानुसार, 'संगीत कला की गुरूद्‌वारा मिली हुई इस परंपरा को प्रामाणिकता से निभाने हेतु शिष्य द्‌वारा ली गयी अविश्रांत मेहनत याने रियाज़।' रियाज़ ही संगीत कला का एक 'मूलभूत सत्य' है। रियाज़ याने अखंड साधना, साधना के लगातार आवर्तन की प्रक्रिया।

2.2. रियाज़ एक मुलभूत शब्दः

ललित कलाओं की सर्वश्रेष्ठ कला 'संगीत' की साधना को 'रियाज' इस संज्ञा से जाना जाता है। कोई भी साधन यह अभ्यासपूर्ण होना जरूरी होता है। इसी प्रकार से, तबले का एक आदर्श तथा अभ्यासपूर्ण रियाज़ होता है। तबले की साधना के लिए केवल अभ्यास यह शब्द इस्तिमाल न करते हुए, इसे 'रियाज़' इस स्वतंत्र शब्द का चुनाव करना जरूरी है। 'रियाज़' शब्द का आपने आप में एक महत्व हुआ

है। 'रियाज़' यह संज्ञा को एक स्वतंत्र तथा विशेष अर्थ है, जिसका आकलन सही अध्ययन से ही होगा। इसलिए 'रियाज़' को केवल साधारण शब्द न कहते हुए संगीत का एक 'मूलभूत शब्द' कहना आवश्यक है, ऐसा शोधार्थी का मानना है। व्यवहार में, निरंतर अभ्यास को सातत्यपूर्ण अध्ययन क्रिया, मेहनत कहा जायेगा लेकिन, संगीत कला के निरंतर अभ्यास, अथक मेहनत को कलाकार के 'रियाज' के नाम से ही जाना जायेगा, क्योंकि कला का महत्व रियाज़ से ही तो हैं। बगैर रियाज़ के संगीत कला की कल्पना भी नहीं की जा सकती इसलिए रियाज़ को संगीत कला का मूलभूत सत्य भी बताया गया है।

रियाज़ याने अभ्यास, मेहनत, साधना। रियाज़ यह एक अखंड प्रक्रिया है, जो अपने आप में ऊर्जा और तेज का प्रतीक है। यह तपश्चर्या याने रियाज़।

कुछ साल पहले, बड़ोदरा में हुए तबला राष्ट्रीय सेमिनार में 'तबले का रियाज़' इस मुख्य विषयपर अपने विचार रखते हुए ज्येष्ठ तबला गुरु पं. सुरेशजी तळवलकरने कहा था, 'संगीत कला में रियाज़ यह किया जाता है, ना ही कहा जाता है। प्रत्यक्ष रियाज़ ही अपने आप में सब कुछ हैं।'

उपर्युक्त एक वाक्य में ही रियाज़ का सार समझ में आता है। शोधार्थी को यह बात, शोधार्थी के मार्गदर्शक गुरु डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी से ज्ञात हुई, जो तबला सम्मेलन के आयोजक थे।

2.3. रियाज़ एवं निकासः

निकास याने प्रत्यक्ष वादन कृति। 'निकासी' याने 'बाहर जाना'। तबले में निकास याने तबलेपर बजनेवाले विभिन्न बोलसमूहों की प्रत्यक्ष वादन कृति की जानकारी। तबले की रचनाओं में विभिन्न बोल तथा बोलसमूहों का समावेश होता है, इसलिए प्रत्येक बोलों का सही–सही निकास समझ लेना आवश्यक होता है। गुरु से निकास अच्छी तरह से याने योग्य तरीके से समझ लेने के बाद ही वह रचना हाथ पर स्थायी रूप से बैठने में सुलभ बन जाती है।

शोधार्थी के मतानुसार, तबले के बोलों की निकास पध्दति समझ लेना ही रियाज़ की पूर्वतैयारी तथा वादक की भूमिका होती है। अक्षरसाधना के पूर्व, वर्णो का

निकास समझ लेना जरूरी होता है। निकास जान लेने के बाद ही वादक प्रत्यक्ष वादन याने रियाज़ के लिए खुद को प्रस्तुत कर पाता है।

निकास के बारे में कथन करते हुए शोधार्थी के गुरु पं. अरविंद मुलगांवकरजी कहते है, ''तबला–डग्गेपर विशेष स्थान पे और विशिष्ट आघात से ही अपेक्षित नादध्वनि की निर्मिती हो सकती हैं। बाँयें की कर्णमधुर मींड, जो तबलावादन में अत्यंत आवश्यक है, उसके लिए उस दृष्टि से रियाज़ होना और भी आवश्यक होता हैं।''[7]

'तीट' वर्ण के रियाज़ में उस्ताद अमीरहुसेन खाँसाहब के कथन को अपने शब्दों में कहते हुए गुरु पं. अरविंद मुलगांवकरजी कहते हैं, ''दायाँ, बाँये की मदद से बोलता है इसलिए बायाँ इन दो साजों का बादशाह है।'' ऐसा कहते हुए खाँसाहब तबलेपर केवल 'तिट तिट तिट' से बोल बनाकर उसके साथ 'क' व 'घ' ये अक्षर डग्गेपर बजाते हुए 'तिटक्डधिकिट' बोलसमूह, दोनों की संयोग से बजाते हुए डग्गे का (बाँया) महत्व बड़ी ही मार्मिकता से दिखाते थे।''[8]

पं. सुधीर माईणकरजी के कथन अनुसार,

''तबलेपर उँगलियों एवं हाथ के आघात से अक्षर निकाले जाते हैं। किन्तु तबले पर एवं बायेंपर भिन्न भिन्न उँगलियों से अलग–अलग भागोंपर किए गए आघातों से स्वरमय एवं प्रभावी शब्द–नादों की निर्मिती होती है। इन सिध्द, विकसित एवं स्वीकृत हस्त–क्रियाओं की शैली को निकास कहते है।''[9]

जान लेना आवश्यक होता है। प्रत्यक्ष वादन में बोल सुस्पष्ट (Distincity) बजना होता है, इसलिए साधक को गुरू के हाथ का रखाव एवं बोलो का निकास देखना अत्यंत महत्वपूर्ण है और इस प्रकार से आकलन हुआ बोल तथा उसके रियाज़ से वादक का हाथ शैलीदार होगा और उसका वादन भी कौशल्यपूर्ण होगा। योग्य निकास एवं रियाज़ से ही वादक के हाथों मे सहजता आती हैं।

तबले–डग्गे पर हाथ रखने की पध्दति याने रखाव तथा तबलेपर उँगलियों से विशिष्ट क्रियाओंद्वारा विशेष स्थानपर आघात करके नाद उत्पन्न करने की रीतियाँ से ही वादन शैली निर्माण होती है।

इस प्रकार से, रियाज़ एवं निकास का परस्परपुरक संबंध है। शोधार्थी के मतानुसार, रियाज़ तथा प्रस्तुतिकरण में निकास और वादन शैली महत्वपूर्ण होती है।

2.4. रियाज़ एक प्रणालीः

तबले की वादनप्रणाली के अंतर्गत रियाज़ का महत्व दिखायी देता है।

जैसे– 'तीट' रियाज़ के लिए विविध कायदों की विद्वानों निर्मिती हुई है। उसी प्रकार रेले, गत, गतटुकडो का भी रियाज़ हैं।

शोधार्थी के गुरु पं. अरविंद मुलगांवकरजी गतटुकडो के रियाज़ के बारे में कथन करते है कि, ''गतटुकडो के अगर छोटे–छोटे भाग कर के उसका पुन पुनः वादन करेंगे तो वह टुकडा हाथ पर चढने में आसानी होगी।'' जैसे,

सा) धगत्तकीट धात्रकधिकिट कतगदिगन

रे) कत्तीटतिट केत्रकधिकिट कतगदिगन इन दो बोलपंक्तियों का अलग –अलग रियाज़ करने के बाद, धगत्तकीट धात्रकधिकिट कतगदिगन कत्तिटतिट केत्रकधिकिट कतगदिगन[10]

इस पूर्ण बोलपंक्ति का रियाज़ करने से कठितम टुकडे हाथपर अच्छी तरह से बैठेंगे। अक्षरों का निकास भी स्पष्ट रहेगा इसलिए इस पध्दति के रियाज़ की अच्छी आदत वादक ने लगानी चाहिए।

बोलों की शुध्द निकास के बारे में पं. विजयशंकर मिश्र अपने विचार रखते हुए कहते है, ''एक सफल तबलावादक के लिए सबसे पहली शर्त यह है की उसके हाथों का रखाव सही हो, बोलों का निकास शुध्द हो। हाथों का सही रखाव– बोलों का सही निकास।''[11]

'तीट' के रियाज़ हेतु रचनाः–

धाधातिट धातिटति टधातिट धाधाधींना

धातिटति टधातिट धाधातिट धाधाधींना – खाली

2.5. रियाज़ एवं रचनाः

तबले की रचना यानी तबले की बंदिश होती हैं। रियाज़ का तबले की रचना की दृष्टि से अत्यंत महत्व है। रियाज़ की दृष्टिकोन से तबले की रचना एवं रचना प्रकारो की अहम् भूमिका है। तबले की रचना का अपने आप में एक महत्व होता है, जिसके रियाज़ से वादक को अनेक फायदे मिलते है।

उदा. रचना : कायदा – (तीनताल) चतुरश्र जाति,

रचनाकारः गुरु पं. आमोद दंडगे

x धाती धाऽकिट तकधाऽ तीधा। किटतक धागे तींना किना।

0 ताती ताऽकिट तकधाऽ तीधा। किटतक धागे धींना गिना।

उपरोक्त कायदे के मुख में 'धाती', 'किटतक', 'धागे', 'धींना', 'गिना', इत्यादी महत्वपूर्ण बोल हैं, जो प्रस्तुत रचना का अधिक महत्व बताते है। इस रचना के रियाज़ से वादक को उपरोक्त बोलोंपर अधिकार प्राप्त हो सकता है, और यें बोल सभी रचना प्रकारों मे पुनरावृत्तित होते रहते हैं, इसलिए इस रचना के रियाज़ से वादक का सर्वांगीण दृष्टि से विचार हो पाता है। इस प्रकार, रियाज करने के लिए वादक द्वारा ऐसी रचनाओं का चुनाव होना जरूरी है, जिनका अपने आप में महत्व हो।

शोधार्थी के मतानुसार, ऐसी महत्वपूर्ण रचनाओं के, रियाज़ की आदर्श बोलपंक्तियाँ कहना उचित होगा। इसप्रकार, रचनाओं को तबले के रियाज़ में महत्वपूर्ण स्थान है। विद्वान कहते है 'कायदे से हाथ बनता हैं।'

कायदे को परिभाषित करते हुए पं. छोटेलाल मिश्र कहते है, ''कायदा तबले में प्रयुक्त होने वाले मूल वर्णो द्वारा निर्मित उस नियमबध्द बन्दिश को कहते है जो मात्रा, ताली, खाली, विभाग पर आधारित होता है तथा जिसका अधिक से अधिक विस्तार होना सम्भव हो।''[12]

पं. सुधीर माईणकरजी के कथन के अनुसार,

''कायदा सुनियोजित एवं सुनिश्चित व्यंजनप्रधान शब्द या शब्द–समूह और उनके पूरक सहायक स्वरमय अंतिम शब्दों की बनी हुई विस्तारक्षम, खंडबध्द, खाली–भरीयुक्त और तालाकार कलापूर्ण ऐसी रचना है, जिसकी प्रस्तुति मध्य तथा द्रुत लय में होती हैं।[13]

शोधार्थी के, गुरु पं. आमोद दंडगेजी कायदे के बारे में लिखते है,

''सुरूवात व शेवट स्वराने होऊन, स्वरव्यंजनाचे योग्य संतुलन साधणारा, खाली–भरी खंडयुक्त व विस्तारक्षम वादनप्रकार, की जो नियमांशी अतिशय बांधिल असतो.''[14]

शोधार्थी मतानुसार, कायदा यह एक ऐसी विस्तारक्षम रचना है, जिसका विस्तार उसके मुख के बोलों के आधार से होते हुए नियमबध्द स्वरूप सें होता हैं। कायदे का वादन मध्य तथा द्रुतलय में होता है तथा कायदे के विस्तार का एक क्रम होता है, अनुशासन होता है, जैसे, मुख, दोहरा, आधा दोहरा, विश्राम, बल, आदि। कायदे के रियाज़ से वादक की 'हाथ तैय्यारी' नजर मे आती है।

उसी तरह, 'ठेका' भी तबले की एक रचना ही है, जिसका रियाज़ भी बड़ा महत्व रखता है। विशेषतः साथसंगीती के लिए विविध ठेको का रियाज़ करना जरूरी होता है, ऐसा शोधार्थी का पूर्व अनुभव है। इसप्रकार, देखा जाए तो तबले के सभी रचनाओं का रियाज़ में अपना –अपना विशेष अलग स्थान एवं महत्व है। विद्वानों ने तबले की रचनाओं में पेशकार, कायदा, रेला का महत्व रियाज की दृष्टिकोन से कथन किया है, साथ–साथ ठेको के रियाज़, विशेषतः 'एक उँगली के तीनताल' के रियाज़ को भी महत्व दिया है।

'ठेका' की परिभाषा करते हुए पं. सुधीर माईणकरजी कहते है,

''ठेका याने सुनिश्चित, सुनियोजित और मान्यताप्राप्त तबला/पखावजपर किए गए आघातों से निर्मित शब्दों, अक्षरों की, तालस्वरूप को व्यक्त करनेवाली शुध्द (मूल) रचनाकृति हैं।''[15]

शोधार्थी के मतानुसार, 'तबला –डग्गेपर जिस सुसंगत वर्ण तथा वर्णसमुहद्वारा ताल प्रकट होता है उस वर्णसमुह को ठेका कहते है। तबले का रियाज़ करने के लिए शब्द एवं शब्दाक्षर समुह का रियाज़ प्रथम करना चाहिए, जैसे धिट, तिट, किट, धिन, तक, धाति, धागेन, धात्रक, धिकिट, कतक, घेतक, ताकिट, घिडनग, तिरकिट, धिरकिट, गदिगन, धिरधिर इत्यादी शब्द तथा शब्दसमुह के योग्य रियाज़ के बाद ही वादक के लिए कायदा, रेला जैसी अन्य रचनाओं का रियाज़ सहज हो पाता है।

2.6. रियाज एक संतुलनः

रियाज़ केवल शरीर से नही हो पाता, रियाज में मन लगानाभी जरूरी है। याने रियाज़ मन से करना चाहिए। इसलिए, रियाज़ में शारीरिक तथा मानसिक संतुलन का बड़ा महत्व है। विद्वान कहते है, रियाज़ करते वक्त, पूरा याने सौ

प्रतिशत ध्यान रियाज़ और केवल रियाज़ में ही होना चाहिए और यह तभी मुमकीन है जब साधक मन से पूरी तरह तैयार हो। याने साधक का शरीर के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ अच्छा होना भी जरूरी है। इसी से, साधक रियाज़ के प्रति संपूर्ण संतुलन कायम रह पाता है। शोधार्थी के मतानुसार संपूर्ण संतुलन के आधार पर ही तबला साधक समर्पनता के साथ रियाज़ करने में सक्षम हो पाता है।

रियाज़ और शारिरीक संतुलन के बारे में अनुमोदन करते हुए शोधार्थी के मार्गदर्शक गुरु डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी अपने शब्दोंमें कहते है,

''रियाज़ यह प्रत्यक्ष वादन करने की क्रिया है, जिसमें शारीरिक क्रिया का महत्व हैं। इसलिए, तबला वादक को अपना शरीर निरोगी, स्वस्थ तथा सशक्त रखना जरूरी है। निरंतर रियाज़ तब ही हो पायेगा जब वादक शरीर से सर्वथा संपन्न हो क्योंकि शरीर की संपन्नता ही वादक का सबसे बड़ा धन होता हैं। स्वस्थ एवं संपन्न शरीर के द्वारा ही तबला वादक अपना पूर्व नियोजित रियाज़ पूर्णतः करने में सक्षम हो पाता है और दिन–ब–दिन वादक अपने रियाज़ में भी बढ़ोतरी कर पाता है। रियाज़ के इस क्रमवार बढ़ोतरी और प्रगति से ही वादक के 'दमसास' इस गुण में यथासमय वृध्दि होती है, जिसे रियाजी वादक का एक अच्छा गुण बतलाया गया है। सारांश, स्वस्थ शरीर से ही वादक रियाज़ के लिए पूर्णरूपसे प्रस्तुत हो पाता है।''[16]

इसी प्रकार, मानसिक संतुलन के बारे में समाधान करते हुए मार्गदर्शक गुरु डॉ. अजय अष्टप्रत्रे अपने विचार रखते है, ''स्वस्थ तथा निरोगी शरीर के लिए वादक को नित्य व्यायाम के साथ–साथ योग साधना और प्राणायम करना भी जरूरी है। तबला वादक के लिए यह एक आवश्यक बात है। योग तथा प्राणायम करने से ही वादक आपने–आप में मानसिक संतुलन बनाये रखता है। मानसिक संतुलन से ही चित्त की एकाग्रता साधी जा सकती है और एकग्रता होना यह रियाज़ साधक का अच्छा लक्षण है। अगर चित में एकाग्रता हो तो ही वादक अपने रियाज़ में पूरी तरह से ध्यान लगाकर रियाज़ एकरूप हो पायेगा अन्यथा वह कुछ भी नही कर पाएगा। इस लिए, रियाज़ के हेतू स्वस्थ शरीर के साथ–साथ चित्त की एकाग्रता भी महत्वपूर्ण है। इस प्रकार मेरे विचार से तबला वादक के शारिरीक तथा मानसिक व्यायाम यह अच्छे लक्षण होते है, जो महत्वपूर्ण है।''[17]

इस प्रकार, नित्य रियाज़ के लिए शारीरिक बल के साथ–साथ मानसिक बल होना भी जरूरी है। इससे ही, वादक अपना संतुलन बनाये रखता है और एक अच्छे–योग्य संतुलन के लिए यह महत्वपूर्ण भी है। योग्य–संतुलन से किये गये रियाज़ में ही वादक का सर्वांगीण वादन विकास हो पाता है, ऐसा शोधार्थी का अनुभव है।

शोधार्थी का प्रति, निवेदन है, एक रियाजी तबला वादक के लिए मुष्टिबल, मानसिक बल तथा बुध्दिबल यह विशेष गुण होते हैं।

2.7. रियाज़ एक बैठकः

रियाज़ करते वक्त याने प्रत्यक्ष वादन कृति में वादक की बैठक महत्वपूर्ण होती है। शोधार्थी के मार्गदर्शक गुरु डॉ. अजय अष्टपुत्रे अपने विचार रखते है की, वादक ने अपने वाद्य की बैठक के साथ–साथ अपनी बैठक भी आदर्श रखना महत्वपूर्ण होता है, जो तबलावादक को रियाज़ की क्षमता बढ़ाने में फलदायक होती है, अपितु वादक को यदि आयना रखकर रियाज़ करना संभव है तो उसे जरूर करना चाहिए। इसे फायदा यह होता है की, अपनी खुद की हलन–चलन वादक स्वयं ही देख पाता है और उसे सुधार पाता है। शोधार्थी के विचार से, रियाज़ के लिए वादक का योग्य संतुलन एवं उसकी आदर्श बैठक ही उसकी रियाज़ के प्रति महत्वपूर्ण भुमिका बनती है। इसी, पार्श्वभूमी के आधारपर वादक रियाज़ के लिए पूरी तरह से प्रस्तुत हो पाता है।

तबले की बैठक के बारे में डॉ. एस्. आर. चिश्ती कहते है,

''संगीत एक प्रदर्शनीय कला है जिसमें कलाकार के उठने बैठने का ढ़ंग, प्रदर्शन का तरीका, हाव–भाव, मुख मुद्रा संचालन सभी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।''[18]

वादक ने अपने वाद्य के रखाव में स्थिरता रखना जरूरी होता है। उनके साथ ही, अपने आप को सुलभ लगे एवं सहजता प्राप्त हो ऐसी आदर्श बैठक में ही वादक ने बैठना चाहिए।

शोधार्थी के पूर्वअनुभव पर एवं कलाकारों के वादन पर दृष्टिपात करने से, वादक की सुलक्ष बैठकता से ही वादन में सहजता का अनुभव मिलता है। योग्य

वादन कृति के लिए और रियाज़ के लिए वादक की बैठक उचित ढंग से होना बेहद जरूरी है।

पं. सुधीर माईणकरजी के कथन अनुसार, ''तबला वादक की बैठक (Pose and Sitting Position) आकर्षक होनी चाहिए। कंधे को समान रख के वादक को सीधे बैठ़ना चाहिए तथा सुहास्य मुद्रा होनी चाहिए।''[19]

सारांश, रियाज़ के लिए वादक की बैठक आदर्श रीति से होना महत्वपूर्ण है। साथ ही, जगह, बैठक, समय के साथ–साथ शुध्द वातावरण, पवित्रता और रियाज़ के लिए मानसिक वृत्ति होना महत्वपूर्ण है।

2.8. रियाज़ एवं समयः

रियाज़ याने संगीत की साधना और साधना का कोई निश्चित समय नही होता। किन्तु, विद्वानों के अनुभव तथा आदर्शो के देखते हुए संगीत की साधना के लिए सुबह का समय योग्य माना गया है। रियाज़ के लिए सुबह का समय ही उत्तम होता है।

शोधार्थी के गुरु पं. अरविंद मुलगांवकर अपने 'तबला' ग्रंथ में उस्ताद अमीर हुसेन खाँ साहब के कथन को अपने शब्दो में लिखते है,

''यह समय (सुबह का) रियाज़ करने के लिए सब से अच्छा समय है– यह फरिश्तों का टहलने का समय है। हम लोग रियाज़ कर के उन्हें यह बता देते हैं कि हम हमारी साधना कर रहे है, आप हमें उसका (रियाज़ का) फल दीजिये।''[20]

उसी प्रकार से, गुरुवर्य पं. अरविंद मुलगांवकर जी अपने विचार रखते हुए कहते है, ''रियाज करण्यासाठी आदर्श वेळ म्हणजे पहाटेची. मन एकाग्र करण्याच्या दृष्टीने पहाटेचा समय हा एक आदर्श समय आहे. अशा वेळी केलेला थोडासा रियाझ सुध्दा वादकास लाख–मोलाचा आहे.''[21]

उपरोक्त, विद्वानों के कथन अनुसार रियाज़ के लिए सुबह का समय सर्वोत्तम बताया गया है। फिर भी शोधार्थी का यह प्रतिनिवेदन है की, वर्तमान समय को देखते हुए वादक ने अपना सुनियोजित रियाज़ पुरा करने के लिए उपलब्ध समय में ईमानदारी से रियाज़ करना जरूरी है। एक ओंर महत्वपूर्ण बात, जैसे समय मिले उसमें स्वैर होकर रियाज़ न करते हुए अनुशासन में रहकर शिस्तबध्दता से

वादक को दो से तीन घंटे नित्य रियाज़ करना भी काफी होता हैं और रियाज़ में निरंतरता रहना महत्वपूर्ण है।

तबले के रियाज़ के लिए सुबह का समय ही क्यों सर्वश्रेष्ठ समय माना गया है? इसपर थोड़ा प्रकाश डालना चाहूँगा। सुबह में जब हम उठते हैं तब हमारे शरीर में शक्ति का अधिक संचय होता है, हम उत्साही होते हैं। हमारा मन भी प्रसन्न रहता है। इसी ऊर्जा के साथ अगर वादक रियाज़ के लिए प्रस्तुत हो तो वह कडी मेहनत से रियाज़ करने में सक्षम होता है और वह जल्दी थकता भी नही, जो सबसे महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, सुबह में रियाज़ के कई लाभ हैं। इन सबका विधायक परिणाम वादक के प्रस्तुति पर होता हुआ दिखायी देता है। शौधार्थी के पूर्व अनुभव पर, साधक को अपना सुनियोजित रियाज़ पुरी तरह से सफल एवं संपन्न करने हेतु रियाज़ के लिए सुबह का समय सर्वश्रेष्ठ हैं।

2.9. रियाज़ एवं वाद्य का संबंधः

रियाज़ एवं वाद्य का बड़ा ही परस्पर पूरक संबंध है। रियाज़ एवं प्रत्यक्ष वादन हेतु वादक के पास उत्तम वाद्य होना आवश्यक है। उत्तम वाद्य याने उत्तम बनावट का वाद्य। उत्तम वाद्य पर किये गये आघातोद्वारा ही अपेक्षित नादध्वनि निर्माण होती है, जो संगीतोपयोगी होती हैं। इसलिए वादक के पास रियाज़ हेतु उत्तम वाद्य होना जरूरी हैं। तबला याने दायाँ अलग–अलग लकड़ी के खोड़से बनता हैं तथा बायाँ अलग–अलग धातु से। इस प्रकार, दायाँ–बायाँ की इस अलग–अलग बनावट् के आधारपर जब इन दोनों पर आघात करके वादन किया जाता है, तब दायाँ–बायाँ के सुरेख मिलाफ से नादध्वनि उत्पन्न होती है तथा दायाँ–बायाँ की उत्पन्न नादध्वनियों में विविधता भी होती हैं। इस प्रकार, दायाँ–बायाँ के संयोग से वादक को विविध नादध्वनियों की अनुभूति मिलती है। तबले–डग्गे की बनावट तथा उसमें हुए नये–नये परिवर्तन ही उसके विकास की नींव बनी, ऐसा कहना उचित होगा। उसी प्रकार, अच्छे बनावट के वाद्य का ही लंबे समय तक अच्छा टिकाव बना रहता है।

शोधार्थी के मार्गदर्शक गुरू डॉ. अजय अष्टपुत्रेजी ने वाद्य के संबंध में तबला नवाझ उस्ताद जाकिर हुसैन साहब का एक किस्सा सुनाया, वह इस प्रकार है–

''एक बार उस्तादजी से किसी जिज्ञासु ने पूछा रियाज़ के हेतु किस प्रकार के याने कितने इंच की पुडी के तबले का इस्तमाल करना चाहिए?''

इस प्रश्न का अभ्यासपूर्ण उत्तर देते हुए उस्तादजी ने कहा, 'तबला किसी भी प्रकार का क्यों न हो? लेकिन जनाब, हाथ तो आपही का है ना? किसी भी तबले पर हाथ का रखाव कैसा होना चाहिए, यह तो स्वयं पर ही निर्भर है।''

सचमुच, रियाज़ और वाद्य के संबंध के बारे में उस्ताद जी ने किया हुआ यह अभ्यासपूर्ण विवेचन महत्वपूर्ण है। शोधार्थी के विचार से, वादक ने इन अनुभवपूर्ण विचारों का अनुकरण करना चाहिए। और एक महत्वपुर्ण बात, अगर वादक संगीतप्रेमी, कलाप्रेमी होगा तो वह निःसंशय अपने वाद्य को भी उसी तरह चाहनेवाला होगा। अच्छी बनावट एवं सुरीले दाँए–बाँए के चुनाव के साथ–साथ वादक ने अपने वाद्य की अच्छी तरह से उचित खयाल रखना जरूरी है। दायाँ याने तबला नीम, आम, शीशम, बिजैसार तथा चंदन के लकडी के खोडसे बनता है और बायाँ याने डग्गा पितल तथा तांबे के धातु से बनता है। अपने वाद्य की नित्य निरंतर के साथ की गई देखभाल और उसके रखाव के आधार पर ही उस वाद्य का रियाज़ हेतु दीर्घकाल तक प्रयोग में लाने के लिए अच्छा उपयोग होता है।

2.9.1. रियाज़ः फायदे एवं गैरफायदे, वाद्य के दृष्टिकोन सेः

हमने वाद्य की अच्छी बनावट़ के बारे में चर्चा की। अच्छी बनावट़ तथा सुरीले वाद्य पर किए गए रियाज़ से वादक को अनेक लाभ मिलते हैं, इसमें कोई शंका नही होती। सुरिला तथा अपेक्षित नाद, अच्छी बनावट़ के दाँये–बाँये से ही निकलना संभव होता हैं। शोधार्थी के विचार से, इसे ही नाद का संस्कार कहना उचित होगा। नाद की साधना ही हर गायक–वादक कलाकार का अंतिम ध्येय होता हैं, इसलिए, अच्छे साज़ की आवश्यकता होती है। अच्छा साज़ है, तो अच्छी आवाज़ भी है। अच्छी बनावट का तथा सुरीला वाद्य इस्तमाल करना तथा बजाना, यह वादक का अपने आप में एक अच्छा लक्षण होता। यह एक अच्छा संस्कार भी है। इससे, वादक की प्रतिभा भी दिखायी देती है।

शोधार्थी के मतानुसार, अच्छी बनावट के तथा सुरीले वाद्य पर रियाज़ करना ही वादक के कला की उचित पूँजी होती है। वादक रियाज़ में एक–एक बोलों का

रियाज करता हुआ उन नादाक्षरोंका तथा नादध्वनियों अनुभव करता है, इसें ही तबले के रियाज़ में 'अक्षरसाधना' कहते हैं। उसी प्रकार, शोधार्थी के पूर्व अनुभव पर ढ़ाल्या तबलेपर (मंद्रसप्तक) किया हुआ रियाज़ काफी लाभदायक एवं परिणामकारक होता है। ऐसे बड़े मुँहवाले तबलेपर रियाज़ करना प्रायः कठिन होता है, इसलिए अथक मेहनत के लिए ढ़ाल्या तबलेपर रियाज़ करना आवश्यक है, ऐसा शोधार्थी का विचार है ढाल्या तबलेपर किए गए आघात से उत्पन्न होनेवाले नाद में दीर्घता होती है, इसप्रकार वादक अपने रियाज़ में इसका अनुभव कर पाता है। नाद की सुक्ष्मता का अनुभव मिलता है, जो महत्वपूर्ण है। शोधार्थी को ढाल्या तबलेपर रियाज़ करने से अपने वादन में अच्छी प्रचिती का अनुभव मिला है, जो वह युवा तबला साधको को बताना चाहता है। इस प्रकार के रियाज़ से वादक को अपने वादन प्रस्तुति में जरूर विधायक परिवर्तन एवं परिणाम दिखाई देंगे, ऐसा शोधार्थी का विश्वास है।

सारांश, प्रभावी वादन प्रस्तुति हेतु वादक के पास उत्तम वाद्य होना अत्यंत आवश्यक है। साथ ही वादक ने अपना नियोजित रियाज़ अलग–अलग मुँहवाले (इंच के) तबलोपर करना उतना ही जरूरी है, जिसे वादक को विभिन्न प्रकार पर बजनेवाले तबले के नाद का अच्छा अनुभव मिलेगा और साथ ही वादक को ऐन वक्तपर किसी भी तबलेपर बजाने का अभ्यास अनायास ही होगा, ऐसा शोधार्थी का विचार है।

संगीत कला में बेसूर तो क्या? लेकिन कणसूर होना भी नही चलता, तो बेसूर या निम्न बनावट के वाद्य की तो बात ही क्या हैं? तबला वादक रियाज़ करता है याने क्या करता है? तो वह एक अच्छे संस्कार रियाज़ के जरिए खुद को देते रहता है और ऐसा प्रत्येक वादक कलाकार का उचित उद्देश्य होना भी चाहिए। रियाज़ की दिशा योग्य होनी चाहिए, उसका मार्गक्रमण योग्य तरीके से होना चाहिए। इसलिए, रियाज़ी वादक ने हमेशा सतर्क एवं जागरूक रहते हुए अच्छी बातों का ही हमेशा स्वागत करना चाहिए। बेसूर वाद्य तथा निम्न बनावट के वाद्य पर अगर हम रियाज़ करेंगे, तो पहली बात हासिल तो कुछ भी नही होगा और सबसे घातक यह होगा कि, वादक पर इस तरह के कुसंस्कार होते जायेंगे। नादध्वनि तो बहोत ही दूर रह गयी लेकिन वो सीधी–साधी अच्छी आवाज़ तक भी नही सुन पायेगा। इसलिए, वादक को इन अनुचित बातों से हमेशा हमेशा दूर ही

रहना चाहिए। वादक को अगर, अपनी प्रस्तुति में अच्छी परिणामकारकता दिखायी देनी हो, तो उसके लिए उसकी रियाज़ की दिशा तय होनी चाहिए।

एक विचार है, अगर मैंने उचित तथा अच्छा कर्म करने का पक्का सोचा हैं तो मैं उसी अनुसार अच्छी अच्छी बाते सीखूँगा, उनका अनुकरण करूँगा, उनका संकलन करूँगा। ठीक इसी तरह, मैने योग्य रियाज़ के बारें में सोचा हैं तो मैं उसी अनुसार अच्छी–अच्छी बाते सीखूँगा, योग्य बनावट का वाद्य इस्तमाल करूँगा तथा मेरे रियाज़ के आदर्श मार्गक्रमण का पालन रहूँगा। कहने का तात्पर्य यह है कि, वादक ने हमेशा अच्छे वाद्य का अपने रियाज़ में स्वागत करना हैं और ऐसी अच्छी आदत भी स्वयं को डालनी है। उचित वाद्य पर किया हुआ रियाज़ तथा वादन ही चिरंतन रहता है, जिसका अनुभव हमें विद्वानों के तबला वादन प्रस्तुति में मिलता है।

यहाँ पर, पं. अरविंद आझादजी के विचार रखना चाहूँगा। वे कहते है, ''अच्छा सुनोगे तो अच्छा सोचोगे और अच्छा सोचोगे तो वैसे ही अच्छी वादन कृति भी करोगे। और एक महत्वपूर्ण बात, जिस वादक की दिशा तय हो उसकी कभी भी दशा नही होती लेकिन, जिसकी दिशा तय नही उसकी दशा हो जाती है।''[22]

रियाज़ तथा वाद्य के संबंध में शोधार्थी का विचार है की, अच्छी बनावट का उत्तम वाद्य ही सही मायने में वादक का तबले के रियाज़ हेतु योग्य प्रवेश है। उत्तम वाद्य ही प्रभावात्मक वादन की सही पहचान है, इसलिए रियाज़ और उत्तम वाद्य का परस्पर निकट संबंध है।

2.10. रियाज़ एवं स्थानः

रियाज याने साधना। योग्य रियाज के जरिए साधक पर योग्य संस्कार होते है। योग्य रियाज़ के द्वारा ही साधक का मार्गक्रमण तथा दिशा योग्य बनती है। योग्य रियाज़ के इसी शुध्दता एवं पवित्रता को देखते हुए वादक को तबले के रियाज हेतु स्थान भी योग्य तथा पवित्र रखना चाहिए, ऐसा शोधार्थी का विचार है। रियाज़ यह एक पवित्र कर्म है। रियाज़ करने के लिए वादक को चाहिए की वह, अच्छे एवं साफ–सुथरे जगह पर ही रियाज़ करें। इन सभी बातों का परिणाम वादक के रियाज़ पर तथा उसकी वादन प्रस्तुति पर निश्चित रूप से होता है। अच्छी

जगह, तथा अच्छे, योग्य वातावरण मे किए गए रियाज़ से वादक को काफी लाभ मिलते है, जिसका सीधा असर वादक के कूल व्यक्तिमत्व पर भी होता है। उचित जगह याने स्थान पर एकांत में किया गया रियाज़ ही असली रूपमें साधना होती है। ऐसे स्थान पर किये गये रियाज़ से उत्पन्न स्पंदन भी वादक को प्रभावित करते है तथा इसका बड़ा पूरक परिणाम वादन पर होता है।

पूर्व समय में गुरूकुल तथा गुरू आश्रम, गाँव–शहर के बाहर नदी के किनारे एकांत मे होते थे। इसकी वजह भी यह थी की साधक एकांत में शांतचित्त होकर संगीत की साधना करें। इस प्रकार, गुरूकुल में विद्यार्थीयों को रियाज़ हेतु, पोषक वातावरण सर्वप्रकारेण मिलता था, जिससे उनकी प्रगति होती थी तथा कलाविष्कार भी प्रभावात्मक होता था। वादक के प्रतिभा का परिचय उसके रियाज़से ही मिलता था। वर्तमान में, गुरूकुल की जगह संगीत संस्थाओं तथा संगीत विद्यालयों ने ली है। लेकिन, यहाँ पर भी विद्यार्थी को उसी भाव से एकाग्रतासे रियाज़ करना जरूरी है। विद्यालयो में अध्यापन तथा साधन के अलग–अलग कक्ष होते है, जहाँपर विद्यार्थीयों ने अपना रियाज़ करना चाहिए, ऐसा शोधार्थी का विचार हैं। गुरूकुल तथा संगीत विद्यालय दोनों ही रियाज़ के हेतु योग्य स्थान है, ऐसा शोधार्थी का मानना है। इसकी प्रमुख वजह यह है कि, दोनों भी स्थानपर गुरू की उपस्थिति रहती है, जो महत्वपूर्ण हैं और गुरू के सन्मुख तथा उनके मार्गदर्शन में रियाज़ होना जरूरी है।

उपर्युक्त स्थान पर किया गया रियाज़ सामूहिक स्तर पर अधिक मात्रा में रहता है, जिसमें विद्यार्थी लगन से उत्साह से रियाज़ करते हुए दिखायी देते है। दुसरी ओर से विचार किया जाये तो, व्यक्तिगत रियाज़ के लिए अपने घर से बढ़कर कोई जगह नही हो सकती। साधक ने अपने गृह में रियाज़ हेतु योग्य स्थान का चुनाव करके उस स्थान को अपने रियाज़ के लिए कायम रखना चाहिए। इन सब का परिणाम उतनाही परिणामकारक होता है।

रियाज़ के स्थान के बारे में कथन करते हुए शोधार्थी के मार्गदर्शक गुरु डॉ. अजयजी अष्टपुत्रे कहते हैं, ''व्यक्तिगत रियाज़ करते समय तबला वादक को अपने घर में, घर के किसी कोने में बैठकर रियाज़ करना चाहिए। इसकी वजह भी यहीं हैं कि, ध्वनिशास्त्र का विचार किया जाय तो, कोने में बैठकर बजाने से अपने वादन

का नाद प्रतिध्वनित होता है, जिसें हम अपने कानों से सुन पाते है। जिससे, यह भी हम तय कर पाते हैं कि, वादन के नाद हेतु हमे और क्या–क्या बदलाव करने है? यह एक बात, और दूसरी यह है कि कोने में बैठकर रियाज़ करने के जो फायदे हमे मिलेंगे वो दूसरी–तिसरी तरफ बैठने से नही मिलेंगे। वादक ने अपने रियाज़ में यह अनुभव करना बहुत जरूरी है। घर के मध्यभाग में बैठकर रियाज़ करेंगे तो अपना ध्यान रियाज़ करते–करते सभी जगह अनायासही जायेगा, लेकिन कोने में बैठने से हमें सामने सिर्फ दीवारे ही दीखेगी और कुछ नहीं, तथा हम अपने रियाज़ में एकाग्र होकर एकरूप हो सकेंगे। रियाज़ में ही सम्पूर्ण लक्ष रखकर नाद का अनुभव सूक्ष्मता से कर पायेंगे। अपना ध्यान इधर–उधर नहीं भटकेगा। मेरे विचार से, रियाज़ एवं स्थान के बारे में विद्यार्थीयों के लिए यह एक अच्छा विचार तथा सुझाव है।''[23]

शोधार्थी के मतानुसार, तबले के रियाज हेतु बैठक, समय एवं स्थान, इनमें ही वादक की रियाज़ के प्रति भूमिका बन जाती है और इसी भूमिका को लेकर वादक प्रस्तुत हो पाता है, अपने रियाज़ के लिए।

पाद–टिप्पणीयाँः

1. चिश्ती, एस. आर., ''तबला संचयन'', हिंदी, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृ. 276.
2. माईणकर, सुधीर, ''तबलावादन कला और शास्त्र'', हिंदी, गांधर्व महाविद्यालय, प्रकाशन, मिरज, प्रथम संस्करण, 2000, पृ. 69.
3. वही, पृ. 69.
4. मुळगांवकर, अरविंद, ''तबला'', मराठी, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तृतीय संस्करण, 2016. पृ.303.
5. तळवलकर, सुरेश, ''आवर्तन– भारतीय संगीतातील स्थूलता आणि सूक्ष्मता'', मराठी, राजहंस प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2014, पृ.56,57.
6. दंडगे, आमोद, ''सर्वांगीण तबला'', मराठी, भैरव प्रकाशन, कोल्हापूर, चौथा संस्करण, 2017, पृ.120
7. मुळगांवकर, अरविंद, ''तबला'', मराठी, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तृतीय संस्करण, 2016. पृ.302.
8. वही, पृ. 291.
9. माईणकर, सुधीर, ''तबलावादन कला और शास्त्र'', हिंदी, गांधर्व महाविद्यालय, प्रकाशन, मिरज, प्रथम संस्करण, 2000, पृ. 70,71.
10. मुळगांवकर, अरविंद, ''तबला'', मराठी, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तृतीय संस्करण, 2016. पृ.309.
11. मिश्र, विजयशंकर, ''तबला पुराण'', हिंदी, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2012. पृ. 171.
12. मिश्र, छोटेलाल, ''ताल–प्रसून'', हिंदी, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2012. पृ. 21.
13. माईणकर, सुधीर, ''तबलावादन कला और शास्त्र'', हिंदी, गांधर्व महाविद्यालय, प्रकाशन, मिरज, प्रथम संस्करण, 2000, पृ. 63.
14. दंडगे, आमोद, ''सर्वांगीण तबला'', मराठी, भैरव प्रकाशन, कोल्हापूर, चौथा संस्करण, 2017, पृ. 68

15. माईणकर, सुधीर, ''तबलावादन कला और शास्त्र'', हिंदी, गांधर्व महाविद्यालय, प्रकाशन, मिरज, प्रथम संस्करण, 2000, पृ. 68.
16. साक्षात्कारः अष्टपुत्रे, अजय, मार्गदर्शक गुरु तथा तबला प्रोफेसर, बड़ोदरा, दि. 7 जनवरी, 2019.
17. साक्षात्कारः वही, दि. 7 जनवरी, 2019.
18. चिश्ती, एस. आर., ''तबला संचयन'', हिंदी, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012, पृ. 9.
19. माईणकर, सुधीर, ''तबलावादन में निहित सौंदर्य,'' हिंदी, सरस्वती पब्लिकेशन, मुंबई, प्रथम संस्करण, 2008, पृ. 175.
20. मुळगांवकर, अरविंद, ''तबला'', मराठी, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तृतीय संस्करण, 2016. पृ.308.
21. वही, पृ. 308.
22. साक्षात्कारः आज़ाद, अरविंद, ज्येष्ठ तबला गुरू, पुणे, दि. 27 नवंबर, 2018.
23. साक्षात्कारः अष्टपुत्रे, अजय, मार्गदर्शक गुरु तथा तबला प्रोफेसर, बड़ोदरा, दि. 26 सितंबर, 2019.